आप एक सच्चे संत के माध्यम से ही दिव्य प्रेम प्राप्त कर सकते हैं।
आपको दिव्य प्रेम तभी मिल सकता है, जब आपके पास वैराग्य हो।

ईश्वरीय प्रेम एक ऐसी चीज है जो अपने आप नही विकसित होती। ये दिव्य प्रेम भगवान की अंतरंग शक्ति है जिसके वशीभूत होकर भगवान खुद रहते है। दिव्य जगत की हरएक वस्तु चेतन होती है। इस दुनिया में आनंद, प्रेम आदि का कोई रूप या शकल नही होती। सब भावनाएँ बस एक अनुभूती होती है। लेकिन दिव्य जगत में सब चेतन होने से सबका रूप होता है। भगवान खुद दिव्यानंद की मूर्ति है। उनके शरीर का एक एक अंग दिव्यानंद से ही बना है। उनके शरीर में हमारे जैसे मायिक हड्डी, मांस, मल, मुत्र, खून आदि नही हुआ करता। तुलसीदास कहते है भगवान की देह 'चिदानंदमय' है। मतलब ये कि भगवान की आँख किससे बनी है? दिव्यानंद से। भगवान की बाल किससे बने है? दिव्यानंद से। भगवान की होठ किससे बने है? दिव्यानंद से। भगवान की हरएक इंद्रिय किससे बनी है? दिव्यानंद से। भगवान का संपूर्ण शरीर किससे बना है? दिव्यानंद से। भगवान और दिव्यानंद पर्यायवाची शब्द है। भगवान में आनंद है ऐसा कहने के लिए ठीक है लेकिन असलियत ये है कि भगवान ही आनंद है और आनंद ही भगवान है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इसी प्रकार श्रीराधा दिव्य प्रेम की मूर्ती है। श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम के वशीभूत होकर रहते है यानी श्रीकृष्ण श्रीराधा के वशीभूत होकर रहते है। इसी दिव्य प्रेम के कारण श्रीकृष्ण गोपियों की ओर आकर्षित होकर महारास

आदि करते है। शुद्ध अंतःकरण को दिव्य बनाने के बाद ये दिव्य प्रेम महापुरूष द्वारा अंतःकरण में डाला जाता है। जीव को अनंत प्यार एवं अनंत आनंद दोनो चाहिए इसलिए राधाकृष्ण दोनों की उपासना बतायी जाती है।

संत का चयन सबसे महत्वपूर्ण है। हम कई उदाहरणों को सुनते हैं जहां भोले लोगों को नकली संतों द्वारा धोखा दिया जाता है। इस समस्या से निपटने के लिए वास्तविक संत के बारे में शास्त्रों के अनुसार दोहरी जाँच करना चाहिए। मूर्ख लोग शास्त्र की बात नही मानते और हर भगवाधारी व्यक्ति को वास्तविक संत मान लेते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में ऐसे नकली संतों के खिलाफ कडी चेतावनी दी हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह ध्यान रहे कि वास्तविक संत को सब शास्त्रों का ज्ञान होना चाहिए। इस तरह के ज्ञान के बिना किसी को वास्तविक नहीं मानना चाहिए।

आप देखेंगे कि कुछ लोग वास्तविक संतों की ओर आकर्षित होते हैं और सभी नहीं। इसके पीछे का कारण शुद्ध हृदय है जिससे इस दुनिया के लिए वैराग्य होता है। अगर वैराग्य नहीं है, तो आपको ऐसी किसी भी बात सुनने के लिए दिलचस्पी नहीं होगी जो एक वास्तविक संत करेंगे, क्योंकि आपका मन सांसारिक मामलों में अधिक रुचि रखता है और ये सांसारिक मामले आपके दिमाग पर पूरी तरह से कब्जा कर लेते हैं और आध्यात्मिक विचारों के लिए कोई जगह नहीं बचती है।

इसलिए यह कहा जाता है कि
आप एक सच्चे संत के माध्यम से ही दिव्य प्रेम प्राप्त

कर सकते हैं।
आपको दिव्य प्रेम तभी मिल सकता है, जब आपके पास वैराग्य हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132